CSIR in Media

Platinum Jubilee 1942-2016

75 Years of

CSIR Touching Lives

News Bulletin

21st to 25th October 2019

NBRI's low-emission aromatic crackers to hit market by next Diwali

CSIR-NBRI

25th October, 2019

The National Botanical Research Institute (NBRI) has developed a range of aromatic crackers that not only pollute less but also give out an aroma. Officials working at the NBRI, part of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), said that a patent would be filed next year and the crackers would hit the market by Diwali 2020. Unlike the previous version of the green cracker developed by the CSIR and several of its labs, including the one at the NBRI, in collaboration with the National Environment Engineering Research Institute (NEERI), last year, this aromatic avatar has been developed by the NBRI alone.

"Our scientists have developed our own green cracker, which is not only low-emission but also aromatic," said SK Barik, director, NBRI, Lucknow. "The product is in the testing phase. The institute will file a patent once it gets a nod from the petroleum and explosives safety organisation (PESO) after safety checks. These crackers have been made to cut down the pollution level by up to 40% when compared to the regular products," he said while highlighting the properties of the new crackers.

Dr OP Siddhu, senior principal scientist and the brain behind the innovation, said, "The aromatic crackers have been made by replacing chemicals with plant-based materials. Be it the oxidising agent, the chemical salts or other substances -- all are plant-based. Thus, when the cracker goes off, there's not as much pollution." Dr Siddhu said he had been working on the project for a year. He also said that while the cracker would produce lower emissions, there "won't be any dip" in its noise level.

Published in:
Hindustan Times

CSIR-IITR

25th October, 2019

SEMINAR ON FOOD SAFETY

Pesticides even in organic vegetables: Experts

HT Correspondent
lkoreportersdesk@htlive.com

LUCKNOW: With rampant and unscientific use, pesticides have entered the food chain and their presence has also been found in organic vegetables.

These findings were shared by experts at a seminar on food safety held at the Indian Institute of Toxicology Research (IITR) in Lucknow on Thursday.

According to findings, 211 of 792 (26.6%) samples of organic vegetables collected in 2018-2019 were found to have pesticides. The samples were taken from organic produce across the country.

In 2017-2018, 22.8% samples were found to have pesticides. In 2016-2017 the number was 18.9%.

The finding uncovers claims of brands that sell items branded as organic products

The finding uncovers claims of brands that sell items branded as organic products, said experts.

Dr KC Khulbe, senior principal scientist of IITR said, "There is no denying the fact that the pesticides used in agriculture enter into the food items and end up on our platter. This is reflected when our food items are declined for import by developed countries in Europe and North America."

The permissible limit of pesticides is different for different countries.

"In North American and European countries, the laws pertaining to permissible pesticide limits are very stringent. In other countries, including India, they are relaxed that terms a certain level of pesticide in food to be safe for consumption," he added.

Experts were of the view that there was a need to include farmers to reduce pesticides in the food they produce.

They also suggested a re-look into the existing system and need of greater government involvement for the same.

Published in:
Hindustan Times

CSIR-CSIO

25th October, 2019

बुलंदी

सीएसआइओ के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. मनोज 100 प्रतिशत दिव्यांग, खेती कर पिता ने बेटे को दिलाई उच्च शिक्षा

कमजोरी को हथियार बना जीती सफलता की जंग

जागरण विशेष

वीणा तिवारी ●चंडीगढ़

बड़े इत्मीनान से हर इम्तिहान पार किया हमने, कुछ इसी तरह से अपना हर सपना साकार किया हमने...ये चंद लाइनें चंडीगढ़ स्थित सेंट्रल साइंटिफिक इंस्ट्रूमेंटल ऑर्गेनाइजेशन के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. मनोज कुमार पटेल पर सटीक बैठती हैं। जिन्होंने अपनी कमजोरी को ही हथियार बनाया और मजबूती से डट गए जिंदगी से मुकाबले को। बार-बार गिरने के बावजूद भी उन्होंने उठने की हिम्मत नहीं छोड़ी। यूपी के बांदा जिले के मियाबरौली गांव में एक किसान के घर जन्म लेने वाला 100 प्रतिशत दिव्यांग बच्चा जो अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता था, उसका परिवार ने हर कदम पर साथ दिया। अपनों के साथ और खुद की इच्छाशक्ति के बल पर डॉ. मनोज देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

छोटे को आगे बढ़ाने के लिए बड़े भाई ने छोड़ी पढ़ाई : छह भाई-बहनों में सबसे छोटे मनोज ने अपने बचपन की यादें साझा करते हुए बताया कि मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं चल नहीं पाता था। मेरे भैया मुझे कंधे पर बैठाकर गांव में घुमाया करते थे। अपनी उम्र के बाकी बच्चों को स्कूल जाते देख जब मैंने भी जिद्द की तो मेरे भाइयों ने मेरी हिम्मत बढ़ाई। हर दिन स्कूल ले जाने और ले आने की जिम्मेदारी ली। आठवीं पास की तो गांव से बाहर पढ़ाई के लिए भेजने का निर्णय लिया गया। मेरे लिए भैया ने दूसरे शहर में काम शुरू किया। दो साल तक मैं और मेरे भैया घर से दूर रहे। 10वीं के बाद मैंने अकेले बाहर जाकर पढ़ाई करने का निर्णय लिया। मेरे घरवालों ने उसका समर्थन किया। मैंने चित्रकूट में अकेले रहकर 12वीं पास की।

चंडीगढ़ : प्रकाश जावड़ेकर से इनोवेटर अवॉर्ड लेते डॉ. मनोज ●जागरण

दुश्वारियों से नहीं घबराया

12वीं के बाद कानपुर आ गया। वहां इंजीनियरिंग की तैयारी की। एनआइटी में सेलेक्शन हुआ। यहां भी दुश्वारियों ने पीछा नहीं छोड़ा। मेरी प्रतिभा को दरकिनार कर कुछ कंपनियों ने मेरी शारीरिक क्षमता को आंककर मुझे लेने से इन्कार किया। मैंने हिम्मत नहीं हारी। इसरो और सीएसआइआर का एग्जाम दिया। सीएसआइआर में सेलेक्शन हुआ। 2010 में सफर शुरू हुआ, 2017 में सीएसआइओ में काम करने के दौरान ही डॉ. पवन कपूर, डॉ. मनोज के नायक और डॉ. सी घनश्याम के सानिध्य में पीएचडी पूरी की।

कृषि के विकास के लिए बनाए ये उपकरण

डॉ. मनोज सीएसआइओ के एग्री ऑनिक्स डिविजन में सीनियर साइंटिस्ट हैं। इन्होंने कृषि के लिए इलेक्ट्रोस्टेटिक कीटनाशक स्प्रेयर, इलेक्ट्रोस्टेटिक धूलशमन और पर्यावरण संरक्षण उपकरण, इलेक्ट्रोस्टेटिक सेनिटाइजर और फलों व सब्जियों के लिए शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रोस्टेटिक खाद्य कोटिंग प्रणाली संबंधी उपकरणों का आविष्कार किया है।

कम समय में बड़ी उपलब्धियां

2016 में राष्ट्रपति भवन में गांधीयन यंग टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन अवॉर्ड

2017 में टॉप 30 इनोवेटर ऑफ इंडिया का अवॉर्ड

2017 में ही टॉप 6 इनोवेटर अवॉर्ड

2018 में विज्ञान भवन में नेशनल सोसाइटल इनोवेशन अवॉर्ड

2019 में कुरुक्षेत्र में यंगर साइंटिस्ट अवॉर्ड

Published in:
Dainik Jagran

CSIR-IHBT

25th October, 2019

नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट संपन्न, सीएसआईआर टीम विजेता

खुशी मनाती विजेता टीम।

पालमपुर 24 अक्तूबर (जसवंत कठियाल): वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड, के तत्वाधान में सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर द्वारा आयोजित नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट काफाइनल मैच धर्मशाला के अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम में 24 अक्तूबर 2019 को संघ लोक सेवा आयोग (युपीएससी) तथा वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के बीच खेला गया। मैच का टॉस सीएसआईआर की प्रथम महिला डा. शर्मिला माण्डे, सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डा. संजय कुमार की उपस्थिति में हुआ। युपीएससी की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेवाजी का निर्णय लिया तथा 30 ओवर में 6 विकेट पर 209 का विशाल स्कोर खड़ा किया। इसमें टीम के सलामी बल्लेबाज अजय ने 71 बालों में 100 रनों का योगदान दिया। इस लक्ष्य का पीछा करते हुए सीएसआईआर की टीम ने 28वें ओवर में ही लक्ष्य को प्राप्त कर इस मैच को 6 विकेट से जीत लिया। गौरव रघुवंशी को मैन ऑफ द मैच रहे। युपीएससी के अजय कुमार मैन ऑफ सीरिज रहे। अपने संबोधन में डा. शमीर्ला माण्डे ने टूर्नामेंट के आयोजक सीएसआईआर-आईएचबीटी का इस राष्ट्रीय स्तर के टूर्नामैंट के फाइनल मैच के लिए धर्मशाला के अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम मे आमंत्रित करने के लिए आभार व्यक्त करते हुए दोनों टीम को अपनी शुभकामनाएं दी। उन्होंने आगे बताया कि धर्मशाला के अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम में खेलना हर खिलाड़ी का सपना होता है और दोनों टीमें बहुत ही सौभाग्यशाली हैं जिन्हे यह सौभाग्य मिला। डा. शमीर्ला माण्डे, डा. संजय कुमार श्रीमती रिचा कुमार ने टूर्नामैंट के समापन समारोह में विजेता टीमों को पुरस्कार बांटे। उल्लेखनीय है कि नायुडम्मा मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड, सीएसआईआर का प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण आयोजनहै तथा इसे एक निश्चित अंतराल के बाद सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में आयोजित किया जाता रहा है तथा इस बार इस टूर्नामैंट को परिषद की पालमपुर स्थित राष्ट्रीय प्रयोगशाला सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर द्वारा आयोजित किया गया। इस टूर्नामैंट में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), भारत सरकार के अतिरिक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इलैक्ट्रनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, संघ लोक सेवा आयोग एवं आईएचबीटी सहित 6 टीमें भाग लिया। इस टूर्नामैंट के लीग व सैमीफाइनल मैच नादौन के अटल बिहारी वाजपेयी एचपीसीए क्रिकेट स्टेडियम में 21 से 23 अक्तूबर 2019 तक खेले गए।

पारस स्कूल के छात्रों ने जीती 5 ट्रॉफियां, 3 पदक

सम्मानित किए गए विद्यार्थी।

पालमपुर (जसवंत कठियाल): पारस पब्लिक स्कूल भवारना के खिलाड़ी छात्रों ने हाल ही में पाइन ग्रोव इंटरनैशनल स्कूल धीरा में संपन्न हुई इंटर खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें पारस स्कूल भवारना के छात्र पांच ट्राफियॉ व तीन पदक पर अपना कब्जा जमाने मे सफल रहे। वालीबाल में अमन, अंश, नितिन, हर्ष, अनमोल, हिमांशु, अनुज ने शिवालिक स्कूल के छात्रों को हरा कर प्रथम स्थान प्राप्त कर ट्रॉफी अपने नाम की। बैडमिंटन में दसवीं कक्षा के अनमोल शर्मा दूसरे स्थान पर रहे। 50 मीटर और 100 मीटर दौड़ मे वाहरवीं कक्षा केवासुदेव प्रथम स्थान पर रहे 50 मीटर दौड़ में दसवीं कक्षा के राहुल तीसरे स्थान पर रहे। इस प्रतियोगिता मे पारस स्कूल के छात्र पांच ट्राफियॉ व तीनपदक पर अपना कब्जा जमाने में सफल रहे। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के कोच अरुण को भी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जो विद्यालय के लिए गौरव की बात है। इस शानदार सफलता के लिए विद्यालय के निदेशक महेश चंद कटोच व प्रधानाचार्य नीलम राणा ने विजेता बच्चों को बधाई दी व खेलों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

Published in:
Dainik Savera

CSIR-CMERI

25th October, 2019

CSIR-CMERI, Durgapur organises awareness program on 'Solid Waste Management & Disposal of Plastic Waste

Kolkata, Oct 24 (UNI) To make the country a plastic-free nation, CSIR-CMERI, Durgapur organised an awareness program on 'Solid Waste Management & Disposal of Plastic Waste today with the students of Hemsheela Model School & Suren Chandra Modern School.

Around 80 students participated in this programme with an aim to create awareness about the recycling of the plastics

All the participating students were apprised about the various aspects of Solid Waste Management and visited Municipal Solid Waste management pilot plant in CSIR-CMERI Colony Campus.

A detailed presentation of all the technologies deployed in the Municipal Solid Waste Management Facility was given to the attending students.

Addressing a gathering, Prof. (Dr.) Harish Hirani, Director, CSIR-CMERI, Durgapur emphasised upon the importance of generating awareness amongst the students which will help in creating a sense of responsibility among them and equip the students with the requisite information to stand against the growing menace of Municipal Solid Waste management.

"Around 15 per cent of packaging material used is plastic. Use of plastic is not bad, it is not our enemy, banning plastic is not a solution to the waste plastic but appropriate uses and scientific disposal are the solutions, " said Mr Hirani.

He also told only ignorance, lack of knowledge, lack of science are creating more problems comparative to plastic. CSIR-CMERI has developed end to end solution and working towards self-sustainability of the waste management plant. He sought for the decentralised process in solid waste management.

During the interactive session, the attending students expressed their appreciation and curiosity for such an interesting and engaging subject.

The two-way exchange of information was very effective and useful.

UNI XC RN

Published in:

UNI

CSIR Labs to sponsor science-inclined students to IISF

CSIR 24th October, 2019

Asks schools to send them names of interested students

Top Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) institutes in the city – Indian Institute of Chemical Technology (IICT), Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB) and National Geophysical Research Institute (NGRI) – have jointly offered to sponsor interested high school students to attend the forthcoming India International Science Festival-2019 (IISF) to be held in Kolkata in November first week.

"We have already approached a few schools requesting them to send us the names of bright students studying between classes IX and XII, who are passionate about science. We will take care of all the expenses for the three-day meet in Kolkata to expose them to the work being done by various scientific institutions across the country," said IICT Director S. Chandrasekhar.

Flanked by CCMB Director Rakesh Mishra and NGRI Director V.M. Tiwari, Dr. Chandrasekhar told a press conference here on Wednesday that while the Indian Science Congress primarily catered to university students, the IISF was for the senior schoolchildren to imbibe scientific spirit, promote scientific temper among students and attract talented youngsters towards careers in science.

Union Minister for Science and Technology Harshvardhan would participate in the festival, which would be held from November 5 to 8, along with other top political leaders. The IISF, which has the support of Prime Minister Narendra Modi, is a new forum started in 2015 to draw young minds towards science and technology and it has earlier been held in Lucknow, twice in Delhi and once in Chennai.

"All the 37 CSIR institutions will showcase scientific achievements at the mega exhibition there and scientists will directly interact with the students and others about the latest happenings in the fields of science and technology in the country," said Dr. Tiwari.

Film festival

Various activities lined up for the science festival include global scientists' meet, young scientists' conference, students science village, women scientists' conclave, teachers' congress, science literature festival, science films festival, start-up conclave and students model competition.

Mr. Mishra pointed out that the CSIR institutions conduct outreach programmes throughout the year throwing open their labs for interested educational institutions and it was imperative to focus on developing science and technology if India is to become a developed nation.

"Attracting young minds is crucial to see progress in research in the fields of science and technology. Public funding or support from the government or from charitable trusts for basic science research is vital as immediate results in these fields are difficult to come by," he asserted.

Earlier, University of Maryland's professor Barton A. Foreman delivered a lecture on 'Global Freshwater from Space: Where, When and How'.

Published in:
The Hindu

CSIR-IITR

24th October, 2019

लोग जागरूक हों तो खाद्य पदार्थों में बंद हो मिलावट

भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान में खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयाम पर गोष्ठी

जागरण संवाददाता, लखनऊ : खाद्य पदार्थों में मिलावट तभी बंद हो सकती है जबकि लोग जागरूक हों। विभाग मिलावटी खाद्य पदार्थों की धड़-पकड़ कर जांच कराता है। केवल प्रदेश में जब्त किए गए नमूनों की जांच निर्धारित अवधि 14 दिनों में की जा रही है। यह तो रही विभागीय पहल। लेकिन इससे भी जरूरी यह है कि लोग जागरूक हों।

यह कहना है अपर मुख्य सचिव खाद्य एवं औषधि प्रशासन डॉ. अनीता जैन भटनागर का। डॉ.भटनागर भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) में खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयाम राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि आज हम कुछ भी खाते हैं तो मन में भय रहता है कि उसमें मिलावट तो नहीं। सवाल नीयत का है। मिलावट करने वाले खाना परोस रहे हैं या बीमारियां उन्हें सोचना पड़ेगा क्योंकि यह बहुत बड़ा पाप है। मिलावट के बारे में यदि कोई शिकायत दर्ज कराना चाहता है तो विभाग द्वारा हेल्पलाइन का संचालन किया जा रहा है। इस पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। स्कूलों में बच्चों को जागरूक करने के लिए मोबाइल वैन से प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। सबसे जरुरी यह है कि लोग सजग हों।

संगोष्ठी में मौजूद अपर मुख्य सचिव डॉ. अनीता जैन भटनागर, आइआइटीआर के निदेशक प्रो. आलोक धावन व अन्य

उन्होंने आइआइटीआर से ऐसे आसान और किफायती जांच तकनीक विकसित करने को कहा जिसे लोग आसानी से अपना सकें। साथ ही अपील की कि भोजन की बर्बादी न करें। उन्होंने जागरण के अभियान आधा गिलास पानी का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसा कर हम हर साल लाखों लीटर पानी बचा सकते हैं।

आइआइटीआर के निदेशक प्रो. आलोक धावन ने कहा कि संस्थान को एफएसएसएआइ ने रेफरल सेंटर घोषित किया है। उन्होंने कहा कि सामाजिक सरोकार के चलते निश्चित नमूनों के बाद अतिरिक्त नमूनों की निश्शुल्क जांच की जाएगी। संगोष्ठी के संयोजक सचिव डॉ. केएम अंसारी ने कहा कि दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में खाद्य सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जाएगी। उत्तर प्रदेश के अलावा मैसूर, चैन्नई, बिहार आदि स्थानों से भी प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

भारत का भी हो ब्रांड खाना : आइआइटीआर के निदेशक प्रो. आलोक धावन ने कहा कि भोजन हमारा जीवन है। इससे जहां हमें शक्ति मिलती है वहीं तमाम रोगों से लड़ने की ताकत। भारत इस मायने में समृद्ध है कि यहां भोजन में बहुत सी विविधताएं हैं। साउथ का भोजन अलग है तो नार्थ का अलग। नार्थ ईस्ट में अलग तरह के भोजन किए जाते हैं तो पश्चिम बंगाल में अलग। लेकिन यहां के भोजन की उस तरह से ब्रांडिंग नहीं जैसे चाइनीज फूड की। उन्होंने एसोचेम से कहा कि ऐसा भोजन तैयार करें जो भारत की ब्रांडिंग कर सके।

आर्गनिक फूड के लिए लोग दे रहे मूल्य : प्रो.धावन ने कहा कि लोगों में स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढ़ी है। लोग गुणवत्तायुक्त खाद्य पदार्थों के लिए अच्छा मूल्य भी चुका रहे हैं। ऐसे में अंतरप्रेन्योर्स के लिए भी स्वरोजगार के काली विकल्प खुले हैं। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि इंवेस्टर्स मीट के दौरान एक पति-पत्नी से मुलाकात हुई थी। उन्होंने खरबूजे, कद्दू आदि के बीजों से सामग्री बनाने का काम शुरू किया था। तीन करोड़ का निवेश देखते-देखते मिल गया। गुणवत्तायुक्त खाद्य सामग्री के लिए बाजार में कोई कमी नहीं।

Published in:
Dainik Jagran

CSIR

24th October, 2019

CSIR Directors provide inputs to forthcoming IISF-2019

HANS NEWS SERVICE

Hyderabad: In view of the Indian Science Festival (IISF)-2019 to be held at Kolkata during November 5-8, the Directors of 3 Hyderabad based CSIR Institutions – Dr. S Chandrasekhar (Director CSIR-IICT), Dr. V M Tiwari (Director CSIR-NGRI) and Dr. R K Mishra (Director, CSIR-CCMB) addressed a joint Press Meet at CSIR-NGRI to brief about the IISF-2019 and the outreach events being conducted by these three Institutions in Hyderabad the as a curtain raiser to IISF-2019.

Dr. V M Tiwari informed that the outreach events at CSIR-NGRI included visit of more than 8000 students/public members as on September 26, which coincided with the Foundation Day of the CSIR. As a part of this outreach programme, more than 250 students visited NGRI on Wednesday to know about its research activities and a public lecture was delivered by Prof. Barton A. Forman (From University of Maryland, USA) on the topic "Global Freshwater from Space: Where, When, and How"

Dr. S Chandrasekhar informed the media that the IISF, organised jointly by Vijnana Bharathi (VIBHA), Ministry of S & T and other science ministries under the GOI started in the year 2015 and is being held every year at different places like Delhi (2016), Chennai (2017), Lucknow (2018). He mentioned that this is a call from Narendra Modi , the president of CSIR and the Prime Minister of India and Dr. Harsh Vardhan (Union Minister for Health and Environmental Welfare, Science and Technology and Earth Sciences) to all the scientific institutions of the country to make the school and college students aware of the scientific achievements that improve/uplift the life style of the public in general.

Few of the students studying from Class IX to XII in Hyderabad schools and colleges, who are interested to attend the event, will be sponsored by the three CSIR institutions in Hyderabad. The Directors have already talked to some of the Principals of Schools to provide the list of enthusiastic and bright students from of these classes for sponsorship. Through this press meet, the three Directors requested some of the parents also to encourage and support their kids to visit IISF, Kolkata.

Dr. R K Mishra, Director, CCMB mentioned that the school and college students of the city and state of Telangana and the surrounding states have opportunities to visit the CSIR institutions in Hyderabad round the year. This way the students get wonderful opportunity to know what is being done at the various national R & D laboratories and how science is serving the society. He also mentioned that the Science & Technology inevitable for sustenance and advancement of the human race. He further stated that there should be an S & T road map for publicity of science. He also said that all the three laboratories are quite active in outreach programmes. He thanked the media for regularly conveying the message very effectively fully to the public.

Dr. V M Tiwari further said that every IISF event will have new editions of Science & Technology that has been brought out during the previous year. He also stated that the displays at IISFs include the issues solvable through science and technology. The fest is being conducted during the festival period of India. Finally, he thanked the media.

Published in:
The Hans India

CSIR-IICT

24th October, 2019

శాస్త్ర సంబరం.. విజ్ఞాన వికాసం

విద్యార్థులకు అవగాహన కల్పిస్తున్న పరిశోధక విద్యార్థి

- కోల్‌కతాలో 'ఇండియా ఇంటర్నేషనల్ సైన్స్ ఫెస్టివల్' నవంబర్ 5 నుంచి
- ఎంపిక చేసిన విద్యార్థులను ఉచితంగా తీసుకెళ్లనున్న పరిశోధన సంస్థలు

ఈనాడు, హైదరాబాద్ : యువత, విద్యార్థుల్లో శాస్త్ర విజ్ఞానంపై జిజ్ఞాస కల్గించడం, 21వ శతాబ్దపు నైపుణ్యాలను పెంపొందించడం, సృజనాత్మకత, విమర్శనాత్మక ఆలోచన తదితర అంశాలపై విద్యార్థులను ప్రోత్సహించే లక్ష్యంతో జరిగే సైన్స్ ఫెస్టివల్ వచ్చేసింది. 'ఇండియా ఇంటర్నేషనల్ సైన్స్ ఫెస్టివల్ 2019' నవంబర్ 5 నుంచి 8 వరకు కోల్‌కతాలో జరగనుంది. నగరం నుంచి 50 మంది వరకు విద్యార్థులను తీసుకెళ్లేందుకు ప్రముఖ ప్రయోగశాలలు ఐఐసీటీ, సీసీఎంబీ, ఎన్‌జీఆర్‌ఐలు సిద్ధంగా ఉన్నాయి. వారి ఆధ్వర్యంలో బుధవారం విద్యార్థులకు అవగాహన కార్యక్రమం నిర్వహించారు.

అవగాహన కార్యక్రమానికి హాజరైన విద్యార్థులతో ఎన్‌జీఆర్‌ఐ డైరెక్టర్ వీఎం తివారి, యూఎస్ ప్రొఫెసర్ బాటన్ ఫార్మన్

పరిశోధనలపై అవగాహన

నగరంలోని పలు పరిశోధన సంస్థలు వేర్వేరు విజ్ఞాన కార్యక్రమాలతో విద్యార్థులకు చేరువయ్యే ప్రయత్నాలు చేస్తున్నాయి. సైన్స్‌డే, ఓపెన్‌డేలు నిర్వహిస్తూ అందరికీ తమ ప్రాంగణంలోని పరిశోధనల గురించి తెలుసుకునే అవకాశం కల్పిస్తున్నాయి. శాస్త్రవేత్తలతో ప్రసంగాలు ఏర్పాటు చేసి విద్యార్థులు, ఉపాధ్యాయులను ఆహ్వానిస్తున్నాయి. సీసీఎంబీ, ఐఐసీటీ, ఎన్‌జీఆర్‌ఐ ఏడాది పొడవునా విజ్ఞాన ప్రదర్శనలు, సింపోజియాలను నిర్వహిస్తూ శాస్త్రీయ దృక్పథం పెంపొందించేందుకు కృషి చేస్తున్నాయి. వేలాది మంది విద్యార్థులు హాజరవుతుండగా సైన్స్ ఫెస్టివల్ ప్రాధాన్యతను ఆయా సంస్థలు వారికి వివరిస్తున్నాయి. ఇతర పరిశోధన సంస్థలు ఐదులో పాలుపంచుకుంటున్నాయి. గురువారం ఉప్పల్‌లోని సెంటర్ ఫర్ డీఎన్‌ఏ ఫింగర్‌ప్రింట్స్ అండ్ డయాగ్నస్టిక్స్, బాలాపూర్‌లోని ఏఆర్‌ఐ ఓపెన్ డే నిర్వహిస్తున్నాయి.

ఆసక్తికరంగా కార్యక్రమాలు

శాస్త్ర సాంకేతికతను ప్రోత్సహించేందుకు, తక్కువ వ్యవధిలో అభివృద్ధి చెందిన దేశంపై భారత్‌ను విజ్ఞానశాస్త్రం ఎలా నడిపిస్తుందో ప్రదర్శించేందుకు 2015లో తొలిసారి ఐఐఎస్ఎఫ్ ప్రారంభమైంది. ఇప్పటివరకు ఢిల్లీ, చెన్నై, లక్నోలో జరిగాయి. ప్రజలు ఎదుర్కొంటున్న సమస్యలకు సైన్స్, టెక్నాలజీ, ఇంజినీరింగ్, మ్యాథమెటిక్స్(స్టెమ్)తో పరిష్కారాలను వెతకడం, జీవన స్థితిగతులపై చర్చించనున్నారు. కేంద్ర శాస్త్ర, సాంకేతిక, ఎర్త్ సైన్సెస్ మంత్రిత్వశాఖ, విజ్ఞానభారతి సంయుక్తంగా ఈ ఉత్సవాలను కలకతాలో నిర్వహిస్తున్నాయి. యువ శాస్త్రవేత్తల సదస్సు, సైన్స్ టీచర్స్ కాంగ్రెస్, మహిళా శాస్త్రవేత్తల సమావేశం, అంకుర సంస్థల సదస్సు, ప్రదర్శన.. ఇలా 25 అంశాలపై కార్యక్రమాలు ఉండనున్నాయి.

శాస్త్రీయ దృక్పథం వైపు

డాక్టర్ రాకేశ్‌మిశ్రా, డైరెక్టర్, సీసీఎంబీ

దేశ పురోగతి శాస్త్ర, సాంకేతికతతో ముడిపడి ఉంది. సాధారణ ప్రజలకు సైన్స్‌పై అవగాహన కల్పించడంతో పాటు దేశంలో శాస్త్రీయ దృక్పథం పెంపొందించేందుకు, శాస్త్రవిజ్ఞానంపై విద్యార్థుల్లో ఆసక్తి పెంచేందుకు ఇది మంచి వేదిక. ఇప్పటివరకు సాధించిన విజయాలను తెలియజేయడంతో పాటు భవిష్యత్తు సాంకేతికతను చర్చించడం చాలా ముఖ్యం.

పాఠశాలలకు లేఖలు రాశాం

డాక్టర్ ఎస్.చంద్రశేఖర్, డైరెక్టర్, ఐఐసీటీ

సైన్స్ ఫెస్టివల్‌కు విద్యార్థులను పంపాలని కేంద్రీయ విద్యాలయంతో పాటు చుట్టుపక్కల పాఠశాలలకు లేఖలు రాశాం. సైన్స్‌పై ఆసక్తి కనబరిచే ఉత్తమ విద్యార్థులను ఎంపిక చేసి పంపాలని కోరాం. ఆసక్తి ఉన్న ఇతర పాఠశాల విద్యార్థులు మమ్మల్ని సంప్రదించవచ్చు. మా సంస్థతో పాటూ సీసీఎంబీ, ఎన్‌జీఆర్‌ఐ సంయుక్తంగా 50 విద్యార్థులను ప్రయోజితం చేయగలం.

ఏటా కొత్త అంశాలతో..

డాక్టర్ వి.ఎం.తివారీ, డైరెక్టర్, ఎన్‌జీఆర్‌ఐ

దేశంలోని శాస్త్ర విజ్ఞానం గురించి తెలుసుకోవడంతో పాటు ఒక సంబరంగా జరుపుకునేందుకు ఐఐఎస్ఎఫ్ ఒక మంచి వేదిక. ఏటా జరుగుతున్నా ఎప్పటికప్పుడు కొత్త అంశాలు ప్రదర్శనలో వచ్చి చేరుతుంటాయి. సీఎస్ఐఆర్‌కు చెందిన 37 ప్రయోగశాలల పరిశోధనలకు సంబంధించి ఒక పెవిలియన్ ఉంటుంది. కొత్త అంశాలు చర్చకు వస్తాయి.

Published in:
Greater Hyderabad

CFTRI offers course in post-harvest technologies

CSIR-CFTRI 23rd October, 2019

It will provide training in processing, production of fruit, vegetable products

CSIR-Central **Food** Technological Research Institute (CFTRI), Mysuru, is conducting a four-week NSQF-aligned Skill Development Programme on Post-Harvest Technologies for fruits and vegetables from November 4 to 29. The course will be conducted on the CSIR-CFTRI campus as per the requirements of the National Skill Development Corporation (NSDC) guidelines.

Two modules

The course offers hands-on training in processing, production, and quality aspects of different fruit and vegetable products. It consists of two modules — the first one will be focused on the modern post-harvest operations of fresh fruits and vegetables to reduce losses during handling and transportation, and to increase the shelf life; the second module will be focused on processing of fruits and vegetables into pulps, juices, beverages, canned products, dehydrated products, pickles, jams, etc.

Upon the successful completion of the programme, candidates will be awarded NSDC certificates in Qualification Pack: Supervisor – Fruits and Vegetables Processing (FIC/Q0109; NSQF level 5), according to a press release here.

The CFTRI said the course would provide a number of job opportunities for persons aspiring for a career in fruit and vegetable industry, horticulture, students, entrepreneurs, self-help groups, FPOs, CFCs, quality control managers, lab technicians/assistants, and entrepreneurs in fruits and vegetables processing, the release added.

The course is open to graduates in science. However, candidates with 10+2 and two to three years' experience in food industry are also eligible. The course fee is ₹20,000 plus GST per person. Those interested may register online at https://www.cftri.com/sdp or contact P. Vijayanand, Chief Scientist and Head of the Department of Fruit and Vegetable Technology, email: fvt@cftri.res.in or Ph.: 9448750674. The last date for registration is October 31.

Published in:
The Hindu

1.3 million tonnes of food wasted annually, says farm scientist

CSIR-CFTRI

22nd October, 2019

'It is more efficient to reduce food loss and waste rather than expand production'

S. Ayyappan, former Director General, Indian Council of Agricultural Research (ICAR) on Monday observed that reduction in **food** loss and waste was far more efficient than expanding food production to increase availability. Globally, up to 1.3 million tonnes of **food** estimated to be lost and wasted annually was equivalent to 24% of all food calories produced for human consumption, he said. Dr. Ayyappan was speaking at the 50th Foundation Day of the Central Food Technological Research Institute (CFTRI) here.

During his talk 'Farm to Food: Connect to Converge,' he said around 520 million tonnes of food was lost in storage and handling while an estimated 780 million tonnes was lost during handling and processing. He added that innovations, inputs, incentives, investments, and institutions can turn farmers into 'agripreneurs'. Among the areas that could be given attention for doubling farmers' income were cutting down on input costs and adding value to produce, besides diversification and integration. Food processing was a key element in improving farmers' income and market for their produce, he explained. By 2050, 70% of the population will move to cities and there will be 70% increase in **agriculture** production, he added.

Advocating the need to move to 'speciality agriculture' to double farmers' income, Dr. Ayyappan, currently the vice-chancellor of Central Agricultural University, Imphal, said skill and youth in agriculture were key besides health and nutritional foods. He said foresight, innovation and mentoring could transform agriculture to 'agripreneurship'

and asked farmers to look for smart innovations to make their occupation even more profitable. On the occasion, the CSIR-CFTRI signed MoUs with Yes Bank and Plataforma Ventures. Earlier, annual awards were presented to scientists, students, departments, non-teaching and other staff. These included the best contribution award, best research publication award for basic sciences, applied research, best student award (M.Sc. Food Technology), best research fellow award, best technology transfer award, best R and D Department award, best support department award, best technical support staff, best individual award for technical contributions and award for outstanding institutional contribution. The programme was followed by an industry meet that representatives from various food industries attended.

'India has the least number of researchers'

For a population of one million, the country has merely 216 researchers. Israel has the highest number of researchers — 8,250 per million population while Denmark and Sweden have 7,515 and 7,153 researchers per million respectively. Among Asian countries, Korea leads with 7,113 researchers. Dr. Ayyappan shared these statistics during his talk.

European and Asian countries have overtaken the United States and the United Kingdom in the area of research. Countries like Brazil (881) and Thailand (1,210) have more number of people carrying out research than India.

Published in:
The Hindu

CSIR-CFTRI

22nd October, 2019

ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಶೋಧಕರ ಸಂಖ್ಯೆ ಕ್ಷೀಣ

ಸಿಎಫ್‌ಟಿಆರ್‌ಐ ಸಂಸ್ಥಾಪನಾ ದಿನಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ನಿವೃತ್ತ ನಿರ್ದೇಶಕ ಎಸ್.ಅಯ್ಯಪ್ಪನ್ ಆತಂಕ

■ **ವಿಕ ಸುದ್ದಿಲೋಕ** ಮೈಸೂರು

ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮಿಲಿಯನ್ ಜನಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಕೇವಲ 216 ಸಂಶೋಧಕರಿದ್ದಾರೆ ಎಂದು ಇಂಡಿಯನ್ ಕೌನ್ಸಿಲ್ ಆಫ್ ಅಗ್ರಿಕಲ್ಚರಲ್ ರಿಸರ್ಚ್‌ನ ನಿವೃತ್ತ ನಿರ್ದೇಶಕ ಎಸ್.ಅಯ್ಯಪ್ಪನ್ ಆತಂಕ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು.

ಮೈಸೂರಿನ ಸಿಎಫ್‌ಟಿಆರ್‌ಐನ ಸಭಾಂಗಣದಲ್ಲಿ ಸೋಮವಾರ ನಡೆದ ಸಿಎಫ್‌ಟಿಆರ್‌ಐ ಸಂಸ್ಥಾಪನಾ ದಿನಾಚರಣೆ ಉದ್ಘಾಟಿಸಿ ಮಾತನಾಡಿದರು.

ಫಾರ್ಮ್ ಟು ಫುಡ್: ''ಕನೆಕ್ಟ್ ಅಂಡ್ ಕನ್ವರ್ಜ್ ಎಂಬ ವಿಷಯದ ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡಿದ ಅವರು, ಭಾರತದ ಜನಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಸಂಶೋಧಕರ ಸಂಖ್ಯೆ ತೀರಾ ಕಡಿಮೆ ಇದೆ. 8,250 ಸಂಶೋಧಕರೊಂದಿಗೆ ಇಸ್ರೇಲ್ ಅಗ್ರಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದೆ, ಡೆನ್ಮಾರ್ಕ್ 7,515 ಸಂಶೋಧಕರನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ ಮತ್ತು ಸ್ವೀಡನ್ 3ನೇ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದೆ. ಆದರೆ, 130 ಕೋಟಿ ಜನಸಂಖ್ಯೆ ಹೊಂದಿರುವ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಮಿಲಿಯನ್ ಜನಸಂಖ್ಯೆಗೆ 216 ಸಂಶೋಧಕರು ಮಾತ್ರ ಇದ್ದಾರೆ,'' ಎಂದರು.

''ಯಾವುದೇ ಕ್ಷೇತ್ರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದ ಬೇಕಾದರೆ ಸಂಶೋಧನೆ ಅಗತ್ಯ. ಹಾಗಾಗಿ ಸಂಶೋಧಕರನ್ನು ಹುಟ್ಟುಹಾಕ ಬೇಕಿದೆ. ಭಾರತದಂತಹ ದೇಶಕ್ಕೆ ಆಹಾರದಂತಹ ಗಂಭೀರ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಲು ಸಂಶೋಧನೆ ಅವಶ್ಯ,'' ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

ಸಿಎಸ್‌ಐಆರ್ ಹಿರಿಯ ಪ್ರಧಾನ ವಿಜ್ಞಾನಿ ಮೀನಾಕ್ಷಿ ಸಿಂಗ್, ಯೆಸ್ ಬ್ಯಾಂಕ್ ಫುಡ್ ಮತ್ತು ಅಗ್ರಿ ಸ್ಟಾಟೆಜಿಕ್ ಹಿರಿಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ ಮತ್ತು ಜಾಗತಿಕ ಮುಖ್ಯಸ್ಥ ನಿತಿನ್ ಪುರಿ ಮತ್ತು ಪ್ಲಾಟ್‌ಫಾರ್ಮ್ ವೆಂಚರ್ಸ್ ಮುಖ್ಯಸ್ಥ ರಾಜೀವ್ ಅಯ್ಯಪ್ಪ ಪರಸ್ಪರ ಒಡಂಬಡಿಕೆಗೆ ಸಹಿ ಹಾಕಿದರು.

''ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಮೂರು ವರ್ಷಕ್ಕಿಂತ ಕಡಿಮೆ ವಯಸ್ಸಿನ ಶೇ.50ರಷ್ಟು ಮಕ್ಕಳು ತೂಕ ಕಡಿಮೆ ಮತ್ತು 20 ಪ್ರತಿಶತ ಅಪೌಷ್ಟಿಕತೆಯಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದಲ್ಲದೆ ಗರ್ಭವತಿಯಾಗುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಹೊಂದುರುವ ಶೇ.80ರಷ್ಟು ಕಬ್ಬಿಣ ಪೋಷಕಾಂಶದ ಕೊರತೆಯಿಂದ ಹಾಗೂ ರಕ್ತಹೀನತೆಯಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಶೇ.57ರಷ್ಟು ಮಕ್ಕಳು, ಮಹಿಳೆಯರು ವಿಟಮಿನ್ ಎ ಕೊರತೆಯಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದಲ್ಲದೆ ಶೇ.17.2ರಷ್ಟುಪುರುಷರು ಮತ್ತು ಶೇ.19.2ರಷ್ಟು ಮಹಿಳೆಯರು ಬೊಜ್ಜು ಹೊಂದಿದ್ದಾರೆ. ಎರಡು ವರ್ಷಕ್ಕಿಂತ ಕಡಿಮೆ ವಯಸ್ಸಿನ ಭಾರತೀಯ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕೇವಲ ಶೇ.6.4ರಷ್ಟು ಮಕ್ಕಳು ಮಾತ್ರ ಕನಿಷ್ಠ ಸ್ವೀಕಾರಾರ್ಹ ಆಹಾರವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾರೆ. ಐದು ವರ್ಷದೊಳಗಿನ ಶೇ.35ರಷ್ಟು ಮಕ್ಕಳ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಕುಂಠಿತಗೊಂಡಿರುತ್ತದೆ. ಜಾಗತಿಕ ವಾಗಿ, 354 ಮಿಲಿಯನ್ ಮಕ್ಕಳು ತೀವ್ರ ಅಪೌಷ್ಟಿಕತೆ, 1,039 ಮಿಲಿಯನ್ ಮಕ್ಕಳು ಮಧ್ಯಮ ಅಪೌಷ್ಟಿಕತೆಯಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದಾರೆ,'' ಎಂದು ಮಾಹಿತಿ ನೀಡಿದರು.

ವರ್ಷದಿಂದ ಕೃಷಿ ಭೂಮಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿಂದ ಕೈ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುತ್ತಿರುವ ಭೂ ಪ್ರದೇಶದ ಬಗ್ಗೆ ಕಳವಳ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ ಅಯ್ಯಪ್ಪನ್, ''ಕೃಷಿ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನಗಳನ್ನುಅಳವಡಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗಿದೆ. ಯುವಕರು ನಗರಗಳಿಗೆ ವಲಸೆ ಹೋಗುವುದರಿಂದ ಕಾರ್ಮಿಕರ ಸಮಸ್ಯೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಅದು ಕೃಷಿಯ ಮೇಲೆ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ. ಇದಲ್ಲದೆ 2050ರ ವೇಳೆಗೆ ದೇಶದ ಜನಸಂಖ್ಯೆಯು ಸುಮಾರು 165 ಕೋಟಿ ಮೀರಲಿದೆ. ಭಾರತದ ತಲಾ ಭೂ ಹಿಡುವಳಿ 0.1 ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗಿಂತ ಕಡಿಮೆಯಾಗಲಿದೆ. ಹಾಗಾಗಿ ಭವಿಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಆಹಾರ ಉತ್ಪಾದನೆಗೆ ಬೇಡಿಕೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಲಿದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ಸಣ್ಣ ರೈತರು ಆಹಾರ ಉತ್ಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಸತನಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಮೂಲಕ ಸ್ಮಾರ್ಟ್ ಫಾರ್ಮರ್‌ಗಳಾಗಬೇಕು,'' ಎಂದರು.

ಇದಕ್ಕೂ ಮೊದಲು ಅಯ್ಯಪ್ಪನ್ ಅವರು ನಾನಾ ಇಲಾಖೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಪ್ರದಾನ ಮಾಡಿದರು. ಎಂಎಸ್ಸಿ ಆಹಾರ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಅಭಿಮನ್ಯು ಸಿಂಗ್ ಉತ್ತಮ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಪ್ರಶಸ್ತಿ, ಜೈವಿಕ ರಸಾಯನಶಾಸ್ತ್ರ ವಿಭಾಗದಿಂದ ಪೂಜಾ ಆಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಸಹವರ್ತಿ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ನೀಡಲಾಯಿತು.

ಈ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸಿಎಫ್‌ಟಿಆರ್‌ಐ ನಿರ್ದೇಶಕ ರಾಘವ ರಾವ್ ಕೆಎಸ್‌ಎಂಎಸ್ ಇದ್ದರು.

ಒಡಂಬಡಿಕೆಗೆ ಸಹಿ

ಕೌನ್ಸಿಲ್ ಆಫ್ ಸೈಂಟಿಫಿಕ್ ಅಂಡ್ ಇಂಡಸ್ಟ್ರಿಯಲ್ ರಿಸರ್ಚ್ , ಯಸ್ ಬ್ಯಾಂಕ್ ಮತ್ತು ಪ್ಲಾಟ್ ಫಾರ್ಮಾ ವೆಂಚರ್ಸ್‌ನ ಅಧಿಕಾರಿಗಳು ಪರಸ್ಪರ ಒಡಂಬಡಿಕೆಯೊಂದಕ್ಕೆ ಸಹಿ ಹಾಕಿದರು.

Published in:
Vijaykarnataka

CMERI director bats for solid waste management system

CSIR-CMERI

21st October, 2019

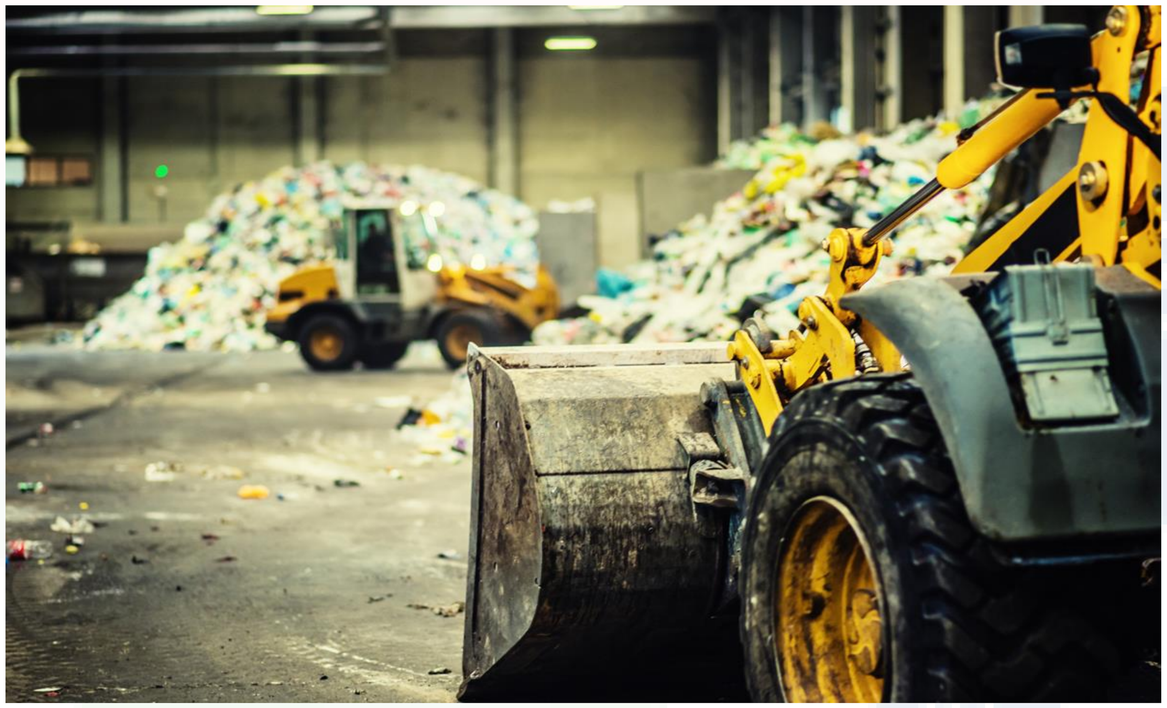

Startup companies in India should think about investing in technologies for social sector such as municipal waste management, said director of CSIR-Central Mechanical Engineering Research Institute (CMERI), Durgapur, Dr Harish Hirani. He was speaking on the occasion of World Habitat Day 2019 organised by Institution of Engineers (India) Durgapur chapter here today on the theme, Frontier Technologies as an Innovative Tool to Transform Waste to Wealth. CSIR-CMERI has been a pioneer in the country for waste management engineering. It has already set up a green colony at its campus in Durgapur with absolutely zero waste. "Fool-proof waste management technology is available. Open dumping and open burning of bio medical waste have become an major concern in India these days and the outsourcing of jobs have only compounded the problem. To avoid birds and flies, waste should be lifted early in the morning and instead of carrying garbage by trucks, the waste products should be treated within invidual colonies of the towns and cities,"said Dr Harish Hirani. Stating that bureaucratic red tapism is a major problem in the implementation of the sustainable solid waste management projects in the country, Dr Hirani said that West Bengal has been lagging far behind in municipal garbage disposal. Solid waste management is directly related to water contamination and air pollution, he added. He stressed the need fora sustainable economy and biodegradable waste management. He also spoke on issues such as waste and environment , plasma gasification process, conversion of waste to gas to produce electricity, eco-friendly disposal of municipal waste without formation and

reformation of toxic dioxins and furans, and large volume reduction of waste. Dr Hirani also focussed on composting, increase in use of organic manure, decrease in chemical fertiliser and improving the soil. Methane is a greenhouse gas with a much higher potential than carbon dioxide, he added. Effluent from biogas plants and pure bio gas can replace CNG and can also generate renewable energy. Biogas is a direct substitute of gas coal for cooking and the 1.5m3 energy is equivalent to one litre of diesel / gasoline. It helps in reducing deforestation and checking soil erosion. Even non-recyclable products like plastics can be converted into wealth through pyrolysis and plasma gasification. Inert materials like construction and demolition wastes can be converted into brick manufacturing

.

Agro wastes can also be converted to operate smokefree chulhas, he said. For a population of 1000 to 2500 using a Rs 1.5 crores solid waste project with rooftop solar system which can process 250 kilograms wastes per day, the daily cost is Rs.1000. Professor KC Ghanta, chairman of IOE, Durgapur, said that urban India is the third largest producer of solid waste. He said that solid, liquid, domestic, industrial and commercial waste needs 5Rs – rethinking, reducing, reusing, refusing and recycling to transform waste to wealth. Sixty per cent of waste in India have been generated by just 10 metropolitan cities, he added.

"Rapid urbanisation and industrialisation have become new challenges due to scarcity of land to dispose wastage. The United Nations Settlement Programmee (UN-HABITAT) celebrates World Habitat Day every year. It aims to remind people that they are responsible for the habitat of future generations to ensure adequate shelter for all," said MK Biswal, secretary of IOE, Durgapur.

Published in:
The Statesman

CSIR-CRRI

21st October, 2019

SMART mobility

SMART ALTERNATIVE

- >1 lakh — Total users until now
- >1,72,000 — Total rides
- >6,50,000 km — Total distance travelled
- >20,000 — Total active users

SUBSCRIPTION PASSES

- ₹199 — One-week pass
- ₹399 — One-month pass
- ₹599 — Three-month pass
- ₹1,999 — One-year pass

SMARTBIKE USER FEES

HOURS	Member-user fees	Pay as you go
First 30 minutes	Free	₹10
30-60 minutes	Free	₹10
1-2 hours	₹15	₹20
2-3 hours	₹25	₹50
3-4 hours	₹40	₹75
4-5		
4-6 hours	₹50	₹90
6-7		
6-8 hours	₹90	₹200
>8 hours	₹200	₹300

I go for yoga classes in the morning, and when I return I take one of these cycles and go for a round. This has become a ritual now. The cycles are so comfortable to ride and have even got gears, which I can adjust according to my convenience.

Sonali Roy, software engineer

Although I am a good rider, you cannot trust the four-wheelers in Delhi. I would not even know if someone driving rashly hit me from behind, and there have been such cases. While the smart cycle concept is excellent, there should be cycle tracks too

Amit Sharan, businessman

HEALTH BENEFITS OF REGULAR CYCLING INCLUDE

- Increased cardiovascular fitness
- Increased muscle strength and flexibility
- Improved joint mobility
- Decreased stress levels
- Improved posture and coordination
- Strengthened bones
- Decreased body fat levels
- Prevention or management of disease

USER PROFILE

- 10% Tourists
- 25% Working professionals
- 65% Students

Men-women ratio 70:30

When it comes to cycling around in a major city, the image that first springs to mind is of Amsterdam: bike paths and racks, little traffic, and locals and tourists going around on bicycles.

Delhi may not have similar biking infrastructure, but the New Delhi Municipal Council has taken a step towards making the national capital bicycle-friendly with the introduction of smart bicycles.

"New Delhi is connected by an exhaustive metro service network and metro commuters use their vehicles to reach metro stations from their homes or workplaces and vice versa. Last-mile connectivity to the metro network from the citizens' homes and workplaces will lead to less dependence on personal vehicles and will encourage people to use public transport," said a top NDMC official who did not wish to be named.

Last December, NDMC introduced 500 SmartBikes in the city to strengthen public transport in the area under its jurisdiction and provide better last-mile connectivity.

Work on the public bike sharing service is being implemented under the public-private partnership model, and 50 bike stations have been set up.

"There were many reasons behind the introduction of smart cycles. The first was to decongest the city, as cycles require less space and can move through traffic. The more users adopt bicycles, it will bring down congestion on the roads. The second was that it is a safe mode of transport, and the third was its health benefits. We want people to use cycles more to remain fit and healthy," stated the official.

How the smart bike works

After downloading the mobile application, users may scan the QR code on the bike or enter the plate number displayed on each bike to receive a passcode to unlock the bike. The app shows locations where the bicycles are available and how many are there in the bike stations.

The bikes can be unlocked only via the app, between 6 am and 10 pm, and they have an electronic tracking system. "There is a GPRS system with the app and that helps the control room keep track of the person using the cycle. If anyone goes beyond the perimeter of the NDMC area, the person will immediately get a call from the control room and will be instructed to return to the area under NDMC," the official said.

On reaching their destination, users have to park the bike in a designated parking area and lock the vehicle. The app shows bike stations that have an empty slot to park a bike.

The NDMC is not the first government body to take such an initiative in Delhi. The Delhi Metro Rail Corporation and North Delhi Municipal Corporation too have launched public bike sharing services, but their vehicles are not smart bikes.

The NDMC has tied up with Hyderabad-based start-up SmartBike Mobility Pvt Ltd, which is providing the smart bikes and the associated technology. "This is the best technology we have got. The same technology is used in bicycles in the Netherlands and Germany. So far there has not been a single case where users have complained or we had to send back a bicycle. All the bikes are functioning smoothly," the official said.

Future plans

Currently there are no designated bike paths on roads, and the NDMC is working on the matter. The official said that planning had already begun for having bike paths and it would be finalised soon.

The civic body is also taking steps to introduce a public e-scooter sharing service to provide a low-cost, flexible and environment-friendly mode of personalised public transport. The main objective of this project is to strengthen last-mile connectivity to supplement public transport and provide a sustainable zero-emission mode of personalised public transport.

Some issues

While the SmartBikes are easy and comfortable to ride, the problem is that they cannot be parked just anywhere, and have to be returned to one of the bike stations.

This reporter took a ride on one of the smart bicycles and it was a good experience, with the brakes working fine and the gears helping one accelerate quickly.

One benefit of a bicycle is that one can ride it even on footpaths, provided they are wide enough and don't have much pedestrian movement.

But while riding on the roads, there is always the fear of speeding two-wheelers and four-wheelers.

Sonali Roy, who lives near Jor Bagh, says that taking a tour of her neighbourhood on a SmartBike has become a ritual for her.

"I go for yoga classes in the morning, and when I return I take one of these cycles and go for a round. This has become a ritual now. The cycles are so comfortable to ride and have even got gears, which I can adjust according to my convenience. In the morning the roads are mostly empty, and I love going around. This is also kind of an exercise," said Roy, who works as a software engineer, beaming as she parked the SmartBike near the Jor Bagh metro station.

Another user, Amit Sharan, who frequently visits the Barakhamba area for work, noted that the advantage of using the cycle was that it could be parked easily, be taken over footpaths, and one did not have to be stuck in a traffic jam.

"I keep visiting the Janpath and Barakhamba area for work. I don't take my car nowadays because parking is a huge issue and my time would be spent looking for parking space. One day I took the metro, and while waiting for an autorickshaw, spotted the cycle and thought of giving it a try. I quickly downloaded the app and used it. Since then, whenever I come for work, I go for the cycles," said Sharan.

One issue mentioned by almost everyone the reporter spoke to was safety. According to the bike users, riding on the roads during heavy traffic movement was risky.

"Although I am a good rider, you cannot trust the four-wheelers in Delhi. I would not even know if someone driving rashly hit me from behind, and there have been such cases. While the smart cycle concept is excellent, there should be cycle tracks or lanes too," Sharan said.

Responding to such concerns, the NDMC official said: "We are looking into the safety aspect of users. There are plans for adding cycle helmets as well, and we will do that very soon. So far the initiative has gone exactly the way we planned it."

Too smart?

Dr S Velmurugan, senior principal scientist and former head, Traffic Engineering and Safety Division, Central Road Research Institute, raised another issue.

The NDMC's initiative is yet to reach a larger audience due to lack of publicity, he noted.

"I don't think it has been publicised that well. Also, this is only for the NDMC area, so all cannot use it, and not for regular purposes. Another factor is that it is app-based. Although everyone uses a smartphone, downloading the app and then paying via plastic money may not be handled by all," Velmurugan noted.

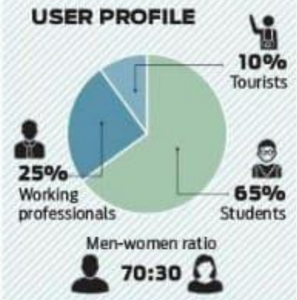

The Morning Standard Mon, 21 October 2019
epaper.morningstandard.in/c/44890775

Published in:
Business Standard

CSIR-CRRI

21st October, 2019

दिल्ली से आए वैज्ञानिकों ने सड़क सुरक्षा पर किया मंथन

पीडब्ल्यूडी के सभागार में आयोजित कार्यशाला में मौजूद इंजीनियर.

◆ नवभारत रिपोर्टर | दुर्ग.
www.navbharat.org

दुर्घटना में सड़क की भूमिका पर दिल्ली से आए वैज्ञानिकों ने दुर्ग संभाग के इंजीनियरों के साथ मंथन किया. पीडब्ल्यूडी विभाग के नवनिर्मित सभागृह में आयोजित कार्यशाला में सड़कों से होने वाली दुर्घटना से बचाव पर विस्तृत चर्चा की गई. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित मापदण्डों के आधार पर सड़कों का निर्माण किए जाने की वकालत की गई.

दरअसल छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा रोड सेफ्टी ऑडिट के तहत सेन्ट्रल रोड रिसर्च एंड इंस्टीट्यूट को 450 किलोमीटर दायरे के अलग-अलग सड़कों में दुर्घटना के बचाव के उपाय मांगे गए हैं. इसे लेकर इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

कार्यशाला

◆ **दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, राजनांदगांव व कवर्धा के इंजीनियरों के लिए रोड सेफ्टी ऑडिट विषय पर लगाई गई कार्यशाला**

दिल्ली से आए वैज्ञानिक डॉ. सुभाषचंद्र, डॉ. मोहन राव व डॉ. रविन्दर ने बारी-बारी से कार्यशाला में इंजीनियरों को संबोधित किया. ये वैज्ञानिक सेन्ट्रल रोड रिसर्च एण्ड इंस्टीट्यूट नई दिल्ली के हैं. वैज्ञानिक डॉ. मोहन राव ने बताया कि दुर्घटना में सड़क की कितनी भूमिका होती है, इस पर विस्तार से जानकारी दी गई. वक्राकार सड़क पर स्पीड नियंत्रण के उपाय बताए गए. टेढ़-मेढ़े रोड पर साइन बोर्ड या स्पीड ब्रेकर की स्थितियां भी बताई गई. इसके अलावा सड़क पर सिग्नल की डिजाइन तथा लाइटिंग की जानकारी दी गई.

फील्ड में भी होगी चर्चा

डॉ. मोहन राव ने बताया कि इंजीनियरों को फील्ड में भी ले जाएंगे, जहां सड़क निर्माण के पहले डिजाइन के बारे में जानकारी दी जाएगी. दुर्घटना वाले सड़क की स्थितियां जांची जाएगी. निर्माणाधीन सड़क पर दुर्घटना से बचाव के तरीके बताए जाएंगे. इसके पश्चात सभी इंजीनियरों से रिपोर्ट मांगी जाएगी.

Published in:
Navbharat Times

CSIR-IHBT

21st October, 2019

मैदान में चौके-छक्के लगाएंगे वैज्ञानिक

सीएसआईआर-आईएचबीटी नायुडम्मा मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का आगाज, नादौन में होगा पहला चरण

जयदीप रिहान-पालमपुर

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, स्पोर्ट्स प्रोमोशन बोर्ड के तत्त्वावधान में सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर में नायुडम्मा मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ हुआ। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने कहा कि खेलों के माध्यम से समाज को एकजुट रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इससे शारीरिक और मानसिक विकास होता है तथा टीम भावना की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने इस समारोह में सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को शपथ दिलाकर इस टूर्नामेंट का विधिवत उद्घाटन किया । सीएसआईआर तथा अन्य विभागों से आए प्रतिभागियों को खेल भावना से खेलने की कामना करते हुए अपनी शुभकामनाएं दीं। स्पोर्ट्स प्रोमोशन बोर्ड, सीएसआईआर के सचिव डा. आरके सिन्हा ने प्रो. नायुडम्मा के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालते हुए विज्ञान के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान के बारे में बताया।

उन्होंने आगे बताया कि नायुडम्मा मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट स्पोर्ट्स प्रोमोशन बोर्ड, सीएसआईआर का प्रतिष्ठित और महत्त्वपूर्ण आयोजन है तथा इसे एक निश्चित अंतराल के बाद सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में आयोजित किया जाता रहा है ।इस बार 21 से 24 अक्तूबर के

दौरान इस टूर्नामेंट को परिषद की पालमपुर स्थित राष्ट्रीय प्रयोगशाला सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में आयोजित किया जा रहा है। आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. अमित चावला ने बताया कि इस टूर्नामेंट में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), भारत सरकार के अतिरिक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, संघ लोक सेवा आयोग एवं आईएचबीटी सहित छह टीमें भाग ले रहीं हैं। लीग मैच 21 से 23 अक्तूबर तक नादौन के एचपीसीए क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे, जिसके लिए प्रतिभागी टीमें रवाना हो गई हैं। इस टूर्नामेंट का फाइनल मैच धर्मशाला के अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में 24 अक्तूबर को खेला जाएगा।

इस अवसर पर माउंट कार्मल स्कूल के बच्चों द्वारा बजाई गई धुन पर प्रतिभागी टीमों ने मार्चपास्ट किया। इस समारोह में स्पोर्ट्स प्रोमोशन बोर्ड, सीएसआईआर के सदस्य डा. शोभना चौधरी, डा. सीके जगताप, एस बालाजी व रमेश बौरा आदि भी उपस्थित थे।

Published in:
Divya Himanchal

आई.एच.बी.टी. में नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट आरंभ

पालमपुर, 20 अक्तूबर (ब्यूरो): वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के तत्वावधान में सी.एस.आई.आर.-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट का शुभारंभ हुआ। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने अपने संबोधन में बताया कि खेलों के माध्यम से समाज को एकजुट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इससे न केवल हमारा शारीरिक विकास होता अपितु मानसिक विकास भी होता है तथा टीम भावना की प्रेरणा मिलती है।उन्होंने इस समारोह में सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को शपथ दिलाकर इस टूर्नामैंट का विधिवत उद्घाटन किया तथा सी.एस.आई.आर. तथा अन्य विभागों से आए प्रतिभागियों को खेल भावना से खेलने की कामना करते हुए अपनी शुभकामनाएं दी हैं।स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड सी.एस.आई.आर. के सचिव डा. आर.के. सिन्हा ने प्रो. नायुडम्मा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विज्ञान के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड सी.एस.आई.आर. का प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण आयोजन है तथा इसे एक निश्चित अंतराल के बाद सी.एस.आई.आर. की विभिन्न प्रयोगशालाओं में आयोजित किया जाता रहा है तथा इस बार 21 से 24 अक्तूबर के दौरान इस टूर्नामैंट को परिषद की पालमपुर स्थित राष्ट्रीय प्रयोगशाला सी.एस.आई.आर.-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में आयोजित किया जा रहा है। आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. अमित चावला ने आए हुए प्रतिभागी खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए बताया कि इस टूर्नामैंट में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी.एस.आई.आर.) भारत सरकार के अतिरिक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी.एस.टी.) पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, संघ लोक सेवा आयोग एवं आई.एच.बी.टी. सहित 6 टीमें भाग ले रही हैं। लीग मैच जोकि 21 से 23 अक्तूबर को नादौन के एच.पी.सी.ए. क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे के लिए प्रतिभागी टीमें नादौन के लिए रवाना हो गई हैं। इस टूर्नामैंट का फाइनल मैच धर्मशाला के अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में 24 अक्तूबर को खेला जाएगा। इससे पूर्व माउंट कार्मल स्कूल के बच्चों द्वारा बजाई गई धुन पर प्रतिभागी टीमों के मार्चपास्ट द्वारा समारोह में चार-चांद लग गए। इस समारोह में स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड, सी.एस.आई.आर. के सदस्य डा. शोभना चौधरी, डा. सी.के. जगताप, एस. बालाजी व रमेश बौरा आदि उपस्थित थे।

पालमपुर : नायुडम्मा मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामैंट के शुभारंभ अवसर पर खिलाड़ी व अन्य। (ब्यूरो)

Published in:
Navbharat Times

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles

CSIR INDIA

CSIR_IND

CSIR India